ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 149-152
www.allresearchjournal.com
Received: 07-07-2021
Accepted: 09-08-2021

ममता सिंह
शोध छात्रा शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा (म.प्र.), भारत

डॉ. पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, आदर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, जिला रीवा (म.प्र.), भारत

Corresponding Author:
ममता सिंह
शोध छात्रा शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा (म.प्र.), भारत

रीवा जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

ममता सिंह, डॉ. पतंजलि मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं व शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक रुचि को ज्ञात किया गया है। 300 छात्र व 300 छात्राओं को प्रतिदर्श लिया गया है, जिन पर शैक्षिक रुचि प्रपत्र का उपयोग किया गया है। यह प्रपत्र डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ के द्वारा विकसित किया गया था। इस प्रपत्र का उपयोग करके समंक एकत्रित किया गया है। समंक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया गया है। समंक विश्लेषणोंपरान्त शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं व शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

कूटशब्दः रीवा जिला, माध्यमिक स्तर के विद्यालय, शहरी–ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, शैक्षिक रुचि

प्रस्तावना
शिक्षा मानव जीवन के विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो शैशवावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक चलती रहती है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में अपना योगदान देती है। शिक्षा का कार्य मानवीय जीवन को सुखमय, सम्पन्न और समृद्ध बनाना है, इसके लिये शिक्षा मानव का शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक आध्यात्मिक और नैतिक विकास करती है और उनकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं मूल्यों और उदेश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। प्रत्येक बालक कल वंशानुगत शक्तियों को लेकर पैदा होता है। सामाजिक पर्यावरण में रहकर इन शक्तियों का विकास होता है। पर्यावरण में रहकर बालक अनेक क्रियायें करता है, जिससे उसे नये अनुभव प्राप्त होते हैं। इन अनुभवों के अनुसार ही वह अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है तथा सुधार भी करता है। जिस बालक को जितने अधिक अनुभव प्राप्त होते है, उसका विकास भी उतना ही अधिक होता है। परिवर्तन व विकास की इस प्रक्रिया को ही शिक्षा कहा जाता है। बालक प्रेम, जिज्ञासा, कल्पना, आत्म–सम्मान आदि मूल प्रवृत्तियों का समुचित विकास करती है। शिक्षा के अभाव में ये प्रवृत्तियाँ अविकसित रहती है। जिससे बालक के व्यक्तित्व का विकास सन्तुलित रूप में नहीं हो पाता। कुल प्रवृत्तियाँ पाशविक होती है, शिक्षा इन प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना उनका मार्गान्तीकरण करना और सुधार करना सिखलाती है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, सामाजिक, नैतिक विकास आवश्यक है। ज्ञान को विस्तृत करने और अपने दृष्टिकोण को विशाल बनाने के लिये मानसिक विकास आवश्यक है। शिक्षा इन सभी पक्षों का संतुलित विकास करती है।

सीखने–सिखाने की सप्रयोजन युक्त सतत् प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियाँ का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान करता है, जीवन को आनन्दमय बनाता है तथा जनकल्याण के कार्यों में प्रवृत्त होता है।

शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान में वृद्धि के द्वारा व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना जिसके जिसके फलस्वरूप बालक को जीवन में सफलता मिलती है। शिक्षा की प्रक्रिया के अन्तर्गत सभी स्तरों पर शिक्षा उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। और इन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति ही शैक्षिक अभिरूचि कहलाती है। इस शैक्षिक अभिरूचि को अनेक कारक प्रभावित करते है जिसके कारण भिन्न–भिन्न छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचियाँ भिन्न–भिन्न होती है। किन कारणों से शैक्षिक रूचि कम होती है। यदि यह तथ्य ज्ञात हो जाये तो रूचि के निषेधात्मक कारणों को घटाया जा सकता है।

शैक्षिक रूचि को प्रभावित करने वाले कारकों में घरेलू वातावरण एक महत्त्वपूर्ण कारक है। घरेलू वातावरण का शैक्षिक अभिरूचि पर प्रभाव का ज्ञान हो जाने पर घरेलू वातावरण को अधिक अनुकूल कर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि को बढ़ाया जा सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा की प्रक्रिया कई घटकों का समूह है जैसे अध्यापक, छात्र, पाठ्यक्रम, विद्यालय प्रबन्धन तथा सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक इन कारकों में रूचि का प्रमुख स्थान है। जिसका शिक्षा की प्रक्रिया में प्रमुख स्थान है। जब तक छात्र–छात्राओं में पढ़ने में रूचि उत्पन्न नहीं की जाती तब तक शिक्षण – अधिगम की प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती। शैक्षिक रूचि पर शहरी–ग्रामीण समाज के जाति, वर्ग, पाठ्यक्रम का समाज पर प्रभाव देखा गया है। शैक्षिक रूचि में अनेक विषय जैसे कृषि, वाणिज्य, कला, गृह विज्ञान, तकनीकी आदि है। इन विषयों में अनेक उपविषय होते हैं जिसमें छात्रों की इन विषयों में रूचि देखी जाती है। छात्र अपनी रूचि, क्षमता तथा प्रतिभा से अपना विकास कर सकता है। अध्यापक को छात्र की रूचि के अनुसार किसी प्रकरण को पढ़ाना चाहिए जिससे छात्र आसानी से किसी प्रकरण को समझ सके। क्योंकि छात्र–छात्राओं की जिस प्रकरण में रूचि होती है, छात्र उसे जल्दी सीखता है। दूसरा शिक्षक की शिक्षण शैली ऐसी हो कि छात्र उस विषय में रूचि ले, जिसे शिक्षक पढ़ा रहा है। उसे छात्रों में प्रकरण के प्रति रूचि उत्पन्न करने के बाद ही शिक्षण कार्य शुरू करना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले कार्यों का महत्व व्यापक होता है। शिक्षा में ऐसे विषयों में किये गये शोध कार्य जो वर्तमान शैक्षिक रुचियों से संबंधित है, वे आज के स्थिति में अधिक महत्वपूर्ण होते है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य क्षेत्र में ही नहीं वरन् अन्य क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा स्तर के क्रिया प्रणाली, उसका क्षेत्र में अनुप्रयोग तथा इसके परिणामों को जानने में उपयोगी होगा।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। अध्ययन में रीवा जिले के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा–9 व 10 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के कुल 20 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में से न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर किया गया है। प्रत्येक चयनित विद्यालयों में से कक्षा 9वीं व कक्षा 10वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है। इस प्रकार कुल 600 छात्र–छात्राओं का चयन न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तो की संकलन विधि में अध्ययन हेतु डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक रुचि प्रपत्र की सहायता ली गई है। प्रत्येक समूहों में 7 विषय है। इस प्रकार कुल 98 उपविषय हैं। शैक्षिक रुचि के अध्ययन के लिए अधिकतम विषय सम्मिलित हैं। कुलश्रेष्ठ के शैक्षिक रुचि प्रपत्र के प्रत्येक विषय के अंतर्गत संभवतः कम से कम शून्य और अधिक से अधिक 14 अंक होते है। प्रत्येक विषय के लिए 1 अंक निर्धारित है। रुचि क्षेत्र के लिए प्राप्तांक की गणना करते हैं उदाहरण के लिए कृषि क्षेत्र में विधा की रुचि जाननी है तो उपर से नीचे की ओर AG –1 के अंक तथा पहली बाऍ से दाऍ आडी कतार में AG –2 के अंक होगें इन कतारों में कृषि क्षेत्र के विषय हैं। AG –1 में सही चिन्ह की गणना करें इसी प्रकार AG –2 की गणना करें इस प्रकार दोनों का जोड़ AG –1 तथा AG –2 के लिए है कुल प्राप्तांक कृषि क्षेत्र का होगा कच्ची गणना मिलने के बाद सभी 7 अलग अलग शैक्षिक क्षेत्र में गणना की गई है इस प्रकार छात्र–छात्राओं के प्राप्तांक के आधार पर सामान्य और विशिष्ट रिपोर्ट तैयार की जा सकती हैं। प्राप्तांक ज्ञात करते समय यह बात ध्यान रखने योग्य है कि एक विषय के समक्ष एक से अधिक बार चिन्ह नहीं लगाया गया है तथा किसी विषय के समक्ष सही एवं गलत दोनों चिन्ह तो नहीं लगाए गए है। यदि ऐसी स्थिति हो तो उसे छोड़ देना चाहिए अर्थात अंक नहीं देना चाहिए।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, निधि, सत्तर, अब्दुल एवं जैन, मनीषा (2020)[1], अग्रवाल, जे.सी. (2010)[2], निगम, प्रतिभा (2004)[3], शर्मा, योगेश्वर प्रसाद, खान, समी उर्रहमान एवं सूरी, रूपाली (2021)[4], पाठक, पी.डी (2007)[5], मिश्रा, रंजना (1993)[6], दीक्षित, कुसुम (1997)[7] ने शोध विधि एवं शैक्षिक रुचि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका क्रमांक 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		300	300
मध्यमान (M)		51.80	43.80
मानक विचलन (SD)		23.59	21.32
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		4.36	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

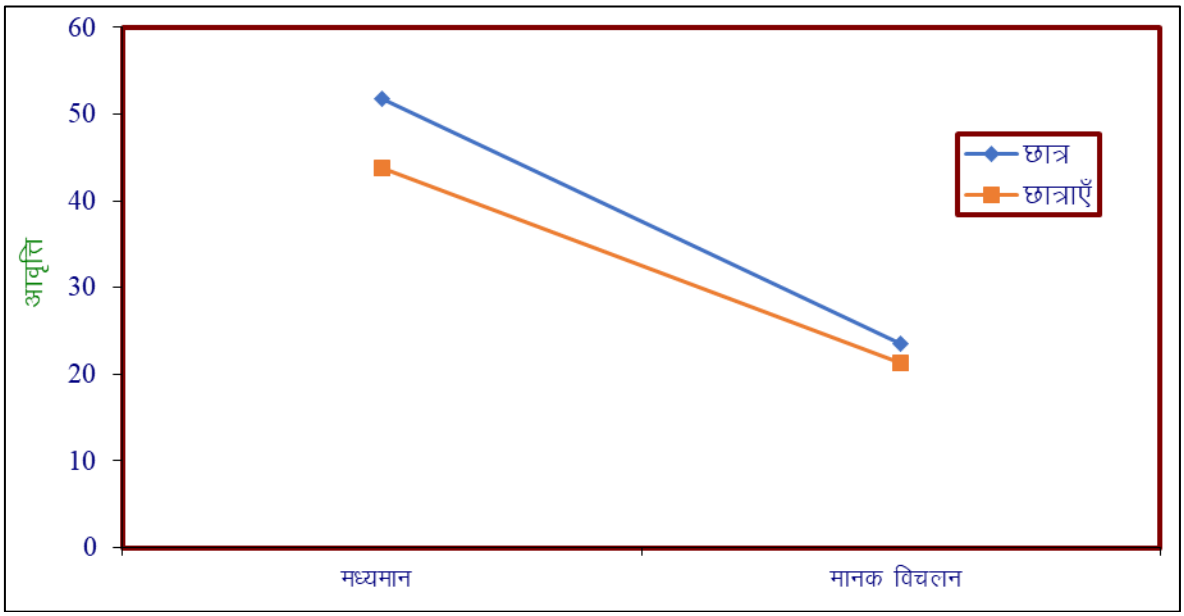

आरेख क्र. 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 51.80 तथा 43.80 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.59 तथा 21.32 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ए ज्मेज) किया गया, जिसमें ब्ए का मान 4.36 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि के दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर देखने को मिलता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के असंगत है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना क्र. 2: "शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर है।"

तालिका क्र. 2: शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी अंचल के विद्यार्थी	ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी
समूह की संख्या (N)		300	300
मध्यमान (M)		51.63	45.60
मानक विचलन (SD)		22.93	21.92
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.29	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

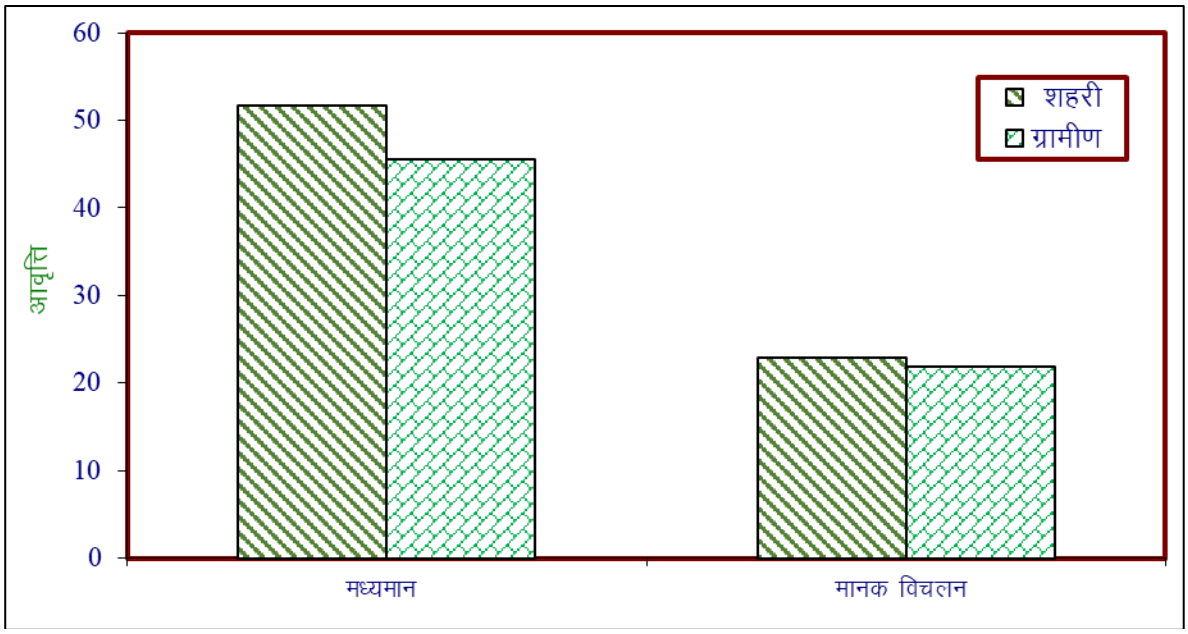

आरेख क्र. 2: शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 51.63 तथा 45.60 तथा मानक विचलन क्रमशः 22.93 तथा 21.92 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.29 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 58 से अधिक है। अतः शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि के मध्यमान में भी सार्थक अन्तर पाया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि सार्थक अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

शोध क्षेत्र में विद्यालय का शैक्षिक एवं घरेलू वातावरण छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचि को प्रभावित करती है। निम्नस्तरीय रुचि वाले छात्र–छात्राऐं अपने अध्ययन की दिशा में असामान्य रुप से अनियमित होते हैं। बच्चों को उचित मार्गदर्शन मिलने से शैक्षिक रुचि एवं योग्यता में वृद्धि होती हैं। उच्च रुचि धारक छात्र–छात्राऐं सत्र के प्रारंभ से ही अध्ययन में रुचि रखते हुए परीक्षा की तैयारी में लगे रहते हैं। इसी प्रकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। निष्कर्षतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर छात्र व छात्राओं के शैक्षिक रुचि में अन्तर है। इसी प्रकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल, निधि, सत्तर, अब्दुल एवं जैन, मनीषा, पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, Int. J Ad. Social Sciences 2020;8(4):173-180.
2. अग्रवाल, जे.सी. डेवेलपमेंट ऑफ एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, नई दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन्स, 2010.
3. निगम, प्रतिभा, माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक रुचियों एवं विद्यालयी अभिवृत्तियों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, एम.एड. डिजर्टेशन, राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फेजाबाद, 2004।
4. शर्मा, योगेश्वर प्रसाद, खान, समी उर्रहमान एवं सूरी, रूपाली, माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का, सामाजिक विषय में निष्पत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन–अमरोहा जनपद के विशेष सन्दर्भ में, National Journal of Multidisciplinary Research and Development 2021;6(2):16-18.
5. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2007.
6. मिश्रा, रंजना, उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1993।
7. दीक्षित, कुसुम, अंतर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुरः कानपुर विश्वविद्यालय, 1997।